SNDT
Women's University

APRIL
2023

हिन्दी विभाग

श्रीमति नाथीबाई दामोदर ठाकरसी
महिला विश्वविद्यालय,पुणे 411038

Tel : 020-25424396
Email Id :
hindipune@sndt.ac.in

Booklet Committee

- **Prof. Medha Tapiawala, Dean, Faculty of Humanities**
- **Mr. Mehul Khale, PRO**
- **Mr. Shrikant Salekar, Jr. Stenographer**

Published by

Shreemati Nathibai Damodar Thackersey Women's University, Mumbai

हिंदी विभाग एस.एन.डी.टी. महिला, विश्वविद्यालय,पुणे 411038

एम.ए.हिन्दी का पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की मौलिक एवं अनूठी है जिससे महिलाओं का बहुमुखी विकास हो सके. साहित्य का अध्ययन जहाँ छात्राओं को हमारे गौरवशाली इतिहास के दर्शन करवाता है तो वही भाषा विज्ञान और काव्यशास्त्र जीवन में रस घोलने का कार्य करता है। मानवीय मूल्यों से भरा साहित्य नारी को समाज और परिवार को गढ़ने में सहायक होता है तो दूसरी और मीडिया में सिनेमा, रेडियो, टेलीविज़न,पत्रकारिता उसे इन क्षेत्रों में महारत हासिल करवाते है। अनुवाद,अनुसंधान एवं प्रयोजन मूलक हिन्दी छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र के साथ बैंकिंग और सारे विश्व से संवाद स्थापित करने में सहायक होता है।लघु शोध प्रबंध और शिक्षावृत्ति उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में अपने अस्तित्व निर्माण में सहायक होती है। एक ज्ञानवर्धक और जीवन जीने की कला सिखाता शिक्षण नारी को जीवन और व्यवसाय के क्षेत्र में सहायक होता है।

डॉ. चंद्रकांत मिसाल

प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख

9822032658,020 5424396

hindipune@sndt.ac.in

सहायक प्राध्यापक

डॉ.मंजूषा पाटील

डॉ.निर्मला राजपूत

डॉ.विनया भालेराव

डॉ.विजय सदामते

डॉ.क्षमा शुक्ला

डॉ.अर्चना घेराड़े

हम हिन्दी क्यों चुने ? बुनियादी सवाल

हमारे विभाग में हम सुनिश्चित करते हैं कि छात्र को आत्मविश्वास, नेतृत्व, बेहतर संचार, और शिक्षण गुण और महिलाओं के सशक्तिकरण और बहुत कुछ प्राप्त करने के साथ उनमें मानवीय मूल्यों का विकास और मानवता की भी शिक्षा मिले ताकि वह एक बेहतर भविष्य के साथ परिवार एवं समाज के लिए भी उपयोगी होने के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में सहायक बन सके। अपने ऐसे ही मूल्यपरक उद्देश्यों के लिए हिन्दी विभाग पुणे 50 से भी अधिक वर्षो से सफलता के साथ प्रयासरत है और सदैव रहेगा। एक नारी उत्थान को समर्पित हिंदी विभाग में आपका स्वागत है।

रोजगार के क्षेत्र की दिशाएं एवं संभावनाएँ

1.अध्यापक-स्कूल,कॉलेज एवं विश्वविद्यालय

2.मीडिया-इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट (अखबार,रेडियो, दूरदर्शन एवं फिल्म आदि में संपादक,संवाद लेखन एवं पाठकथा लेखन मे रोजगार)

3.लेखन अनुवाद, साहित्य, बैंक में उच्च अधिकारी, विदेशी मार्केट से परिसंवाद

4.सेवाएँ-सरकारी एवं गैर सरकारी

5.संस्थानों में विविध हिंदी पदाधिकारी

हिन्दी विभाग की गौरवशाली परम्परा का संक्षिप्त परिचय

- विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, पुणे का आरम्भ – 1971
- 1971 से 2020-23 में हिंदी विभाग अपने गौरवशाली परम्परा के स्वर्ण उत्सवी 50 वर्ष पूरा कर चुका है.
- स्नातकोत्तर हिंदी विभाग 1997 में सुसज्जित वास्तु में एवं 2021 में स्वतंत्र हिन्दी विभाग प्रशस्थ कक्षाओं में स्थलान्तरित हो गया है.
- विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के आरम्भ से ही पूर्व निर्धारित एम.ए.एवं पीएच.डी. का पाठयक्रम रहा हैं. इसका साथ ही हिन्दी विभाग पटकथा लेखन,विज्ञापन लेखन,गीत लेखन जैसे लघु अवधि के पाठ्यक्रम आरंभ कर रहा हैं.
- अधिकांशत: प्रति वर्ष लगभग 100% परिणाम रहा है.
- विभाग की अधिकांश छात्राएं प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करती आ रही है और कई शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में संतोषजनक अपनी सेवाएँ दे रही है.

उद्देश्य

‘संस्कृता स्त्री, पराशक्ति स्वर हमारा है

विश्व है परिवार, भारत घर हमारा है’

नारी शक्ति का सशक्तिकरण ही घर-परिवार एवं सम्पूर्ण विश्व मानवता का सशक्तिकरण हैं.

मूल्यों की रक्षा के लिए प्रशिक्षित करना.वैश्विक मानवीय मूल्य की अवधारणा से छात्राओं को अपने व्यक्तित्व एवं व्यवहार में साकार करें इसके लिए तैयार करना

अपने जीवन को सही ‘अर्थ’ प्रदान करें तथा अपने जीविका उपार्जन के लिए नैतिक मूल्यों से अर्थार्जन कर हर दृष्टि से छात्राओं को आत्मनिर्भरता,समानता और न्याय इन बुनियादी

लक्ष्य

हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान से छात्राओं को ज्ञान-बल-सेवा का साक्षात दूत बनाना और हमारे समाज,देश प्रकारान्तर से इस विश्व को सुंदर बनाने मे योगदान देना प्रमुख लक्ष्य है.

➢ हमारा पाठ्यक्रम

- एम. ए. हिंदी (M.A Hindi) अवधि-2 शैक्षणिक वर्ष 4 सत्र योग्यता-मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में स्नातक उपाधि
- पीएच.डी.(Ph.D.)अवधि तीन शैक्षणिक वर्ष अपेक्षित योग्यता- किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि एवं SET/NET/JRF/PET परीक्षा पास

➢पाठ्यक्रम में UGC के द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन निर्धारित समय सीमा में BOS की नवनूतन पाठयक्रम का निर्माण होता है.

➢विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम समिति में विधिवत् चुने गए प्रतिनिधि,विभाग प्रमुख एवं विविध क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों के नवनूतन मौलिक सुझावों को शामिल किया जाता है.

➢BOS पाठ्यक्रम समिति नवनूतन का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखती है की पाठ्यक्रम आज के युग के अनुरूप, प्रासंगिक,जीवन उपयोगी,व्यवसाय अभिमुख,आत्मनिर्भर और महिलाओं के व्यक्तित्व विकास समाज उपयोगी एवं राष्ट्रनिर्माण में सहायक हो.

➢हिन्दी एम.ए.पेपर की इकाई के अनुसार सूक्ष्म सम्पूर्ण अध्यापन,मूल्यांकन एवं परीक्षा प्रणाली.

➢वर्ष– 02

➢सत्र– 04

➢श्रेयांक– 80

➢शिष्यवृति– 8

➢लघु शोध प्रबंध- 8

मौखिक प्रस्तुति–10,लिखित–15,सत्रांत परीक्षा–75,कुल-10

अध्ययन,अध्यापन,अनुसंधान एवं मूल्यांकन

- प्रशिक्षण वृत्ति-साहित्यिक क्षमताओं का विकास करने वाला अध्ययन कराना,सामाजिक एवं साहित्यिक विकास में सहयोग,रुचि एवं रुझान के अनुसार अनुसंधान करवाना,छात्राओं के रुचि के क्षेत्र में प्रशिक्षण वृत्ति करवाना.
- प्रशिक्षण वृत्ति-साहित्यिक क्षमताओं का विकास करने वाला अध्ययन कराना,सामाजिक एवं साहित्यिक विकास में सहयोग,रुचि एवं रुझान के अनुसार अनुसंधान करवाना,छात्राओं के रुचि के क्षेत्र में प्रशिक्षण वृत्ति करवाना.
- यह पाठ्यक्रम अधिक रोचक प्रभावी ढंग से पढ़ने के लिए अध्ययन अध्यापन अनुसंधान पर बल देते हुए आत्याधुनिक संसाधन संगणक,पी.पी.टी.प्रस्तुति,रेडियो और टीव्ही का आवश्यकता के अनुसार किया जाता है.
- *अध्यापन कार्य चर्चात्मक *समीक्षात्मक *रचनात्मक सौंदर्य *लिखित मौखिक अभिव्यक्ति कौशल्य *बौद्धिक, क्षमताओं का विकास पर केन्द्रित
- *अध्यापन करवाना *संगोष्ठी लेना *चर्चा परिचर्चा कराना *मौखिक लिखित परीक्षा लेना

भविष्य के नियोजन एवं तैयारियां

लघु अवधि का पाठ्यक्रम नियोजन

- सिनेमा और धारावाहिक के लिए
- पटकथा लेखन
- संवाद लेखन
- गीत लेखन
- ऑनलाइन पाठयक्रम एवं प्रमाणपत्र
- सिनेमा रसास्वादन कार्यशाला

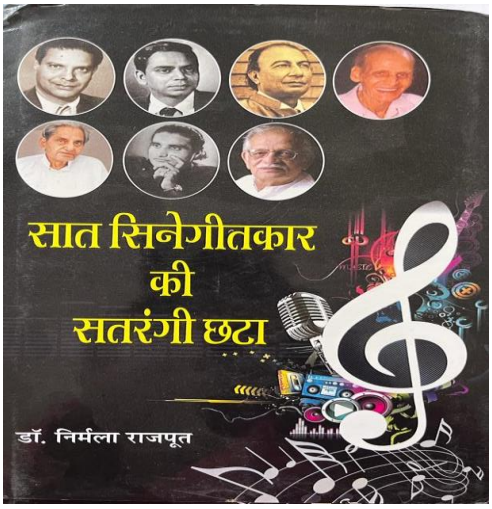

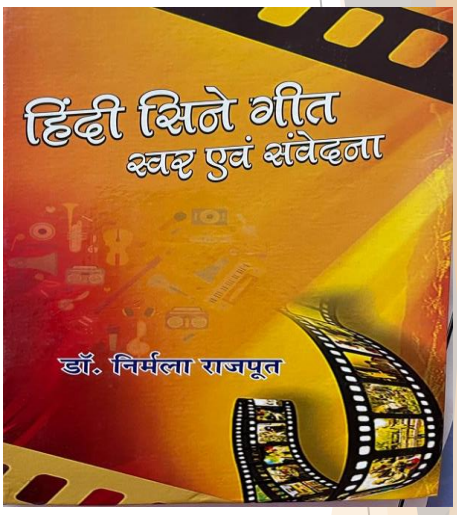

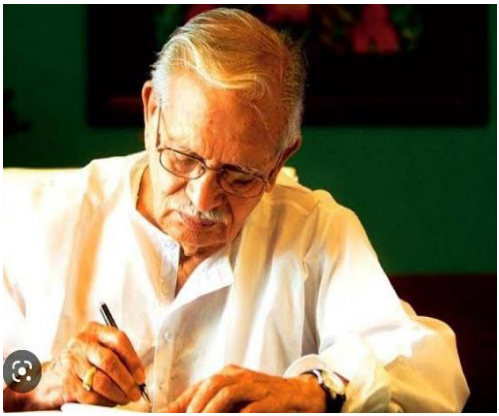

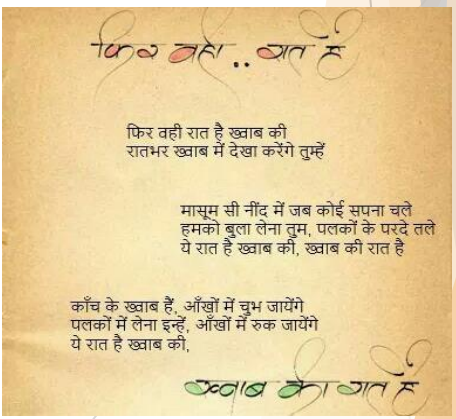

दीर्घकालीन नियोजन

- हिन्दी साहित्य की अमर कालजयी बहू चर्चित कहानियों, उपन्यासों एवं नाटकों का सिनेमा एवं धारावाहिक के लिए पठकथा लेखन के लिए एक स्वतंत्र हिन्दी अनुभाग
- पेट, नेट, सेट के लिए नियमित कार्यशालाएं

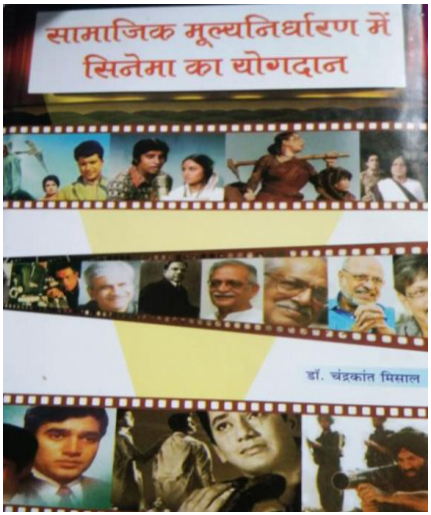

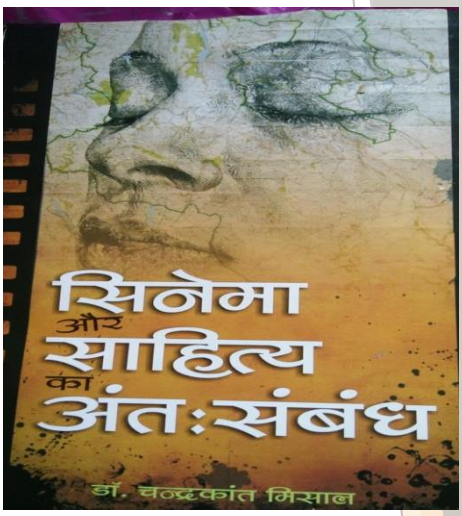

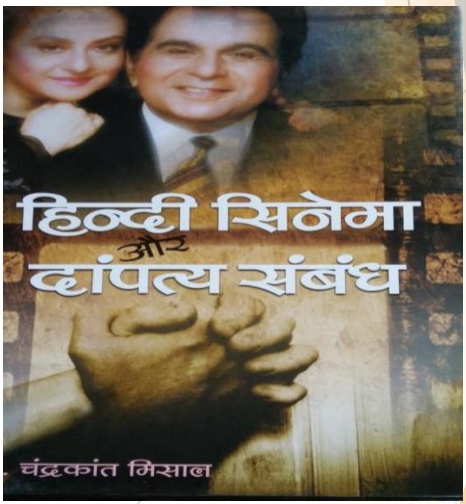

अनुसंधान,परामर्श,विस्तार तथा शोधकार्य से संबन्धित गतिविधियां व सम्मान

- प्रोफ़ेसर चंद्रकांत मिसाल की गतिविधियां,सम्मान एवं प्रकाशन
- प्रकाशित पुस्तके-3,पुस्तक सह लेखन-1,पुस्तक सह संपादन-2,शोध आलेख प्रकाशित-11अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी,राष्ट्रीय संगोष्ठी,राज्यस्तरीय संगोष्ठियों में आलेख प्रस्तुति-12,व्याख्यान-3
- विभिन्न उतरदायित्वों का निर्वाहन-3,विषय विशेषज्ञ -13, फिल्म सेंसर बोर्ड सदस्य,सम्मान-3
- पीएच.डी.उपाधि प्राप्त-6,पीएच,डी.कार्यरत-5,पीएच.डी.शोध प्रतीक्षारत-8, एम.ए.लघु शोध प्रबंध-70 से भी अधिक
- डॉ निर्मला राजपूत को ICSSR दिल्ली द्वारा पोस्ट डॉक्टरल फ़ेलोशिप 2019-20,ग्रांट 794000
- विषय:'हिन्दी सिनेगीतों मे मानवीय मूल्य,साहित्यिक रचनाधर्मिता और कोरोना काल में की गयी सेवाओं के लिए सम्मान-5

➢ प्रशासनिक नेतृत्व एवं अधिकारिक नियंत्रण

- नियमित अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान की गतिविधियों की पुष्टि
- प्राध्यापकों का वार्षिक,शैक्षेणिक अहवाल एवं CL.,DL.का रख रखाव
- आर्थिक व्यवहार एवं ऑडिट की फ़ाईलों का रख रखाव
- विभाग की वार्षिक दिनदर्शिका का नियोजन
- प्रवेश आरक्षण समिति
- छात्र अध्यापक सेतु समन्वय समिति एवं संवाद
- महिलाओं के लिए रोजगार
- नेतृत्व विकास
- गुणवत्ता नीति (AQAR)
- प्राध्यापकों द्वारा छात्राओं के प्रदर्शन का मूल्यांकन
- छात्राओं एवं अध्यापकों की नियमित उपस्थिति का विवरण
- नियमित एवं निर्धारित कक्षाएँ एवं पाठ्यक्रम की पूर्ति
- महिला प्राध्यापकों द्वारा समुपदेशन एवं मार्गदर्शन
- विविध विभागीय कार्यक्रमों में अवसर और प्रस्तुति
- विभागीय ग्रंथालय का छात्राओं द्वारा व्यवस्थापन

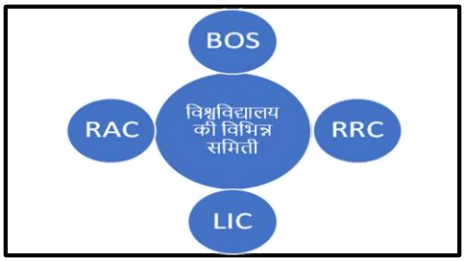

छात्राओं के लिए सुविधाएँ, सहयोग एवं संख्या विवरण

सुविधाएँ एवं सहयोग

- छात्राओं के लिए शिक्षा मानधन
- प्रतियोगीता परीक्षाओं का मार्गदर्शन (UPSC, SET, NET, PET)
- रोजगार के लिए अवसर
- छात्राओं का प्राध्यापकों द्वारा समुपदेशन
- विभागीय ग्रंथालय
- TV,LCD,PPT प्रोजेक्टर
- संगणक प्राथमिक प्रशिक्षण
- संस्थाओं का चुनाव और सुझाव
- आर्थिक सहयोग
- अनुसंधान एम.ए. ,पीएच.डी.मार्गदर्शन
- प्रतिवर्ष की छात्राओं का व्हाट्सएप ग्रुप द्वारा रोजगार के रिक्त पदों की सूचनाएँ एवं भविष्य का मार्गदर्शन
- प्रथम वर्ष की छात्राओं को मार्गदर्शन, समुपदेशन
- पाठ्यक्रम में निर्धारित सिनेमा, नाटक का रसास्वादन

नवाचार एवं सर्वोत्तम अभ्यास

- मौलिक पुस्तकों की समीक्षा
- हिन्दी भाषा तकनीक पर सवार
- शिक्षावृत्ति में भविष्य के कार्य क्षेत्र का बीज
- पाठयक्रम सामग्री की ऑनलाइन पूर्ति
- पाठ्यक्रम में आत्मिक विकास एवं आर्थिक पहलू
- साहित्यिक फिल्म और धारावाहिक समीक्षा
- साहित्यिक एवं शैक्षणिक विभागीय गतिविधियों का आयोजन
- छात्राओं की व्यक्तिगत जरुरत के अनुसार मार्गदर्शन एवं समुपदेशन
- विभिन्न प्रतियोगिता, साहित्य सम्मलेन में सहभागिता लेने हेतु प्रोत्साहन
- मीडिया, सिनेमा और रोज़गार और शोध की संभावनाओं के लिए मार्गदर्शन
- अब तक 90 प्रतिशत छात्राओं का हिंदी विभाग द्वारा अन्य संस्थाओं में रोज़गार, जीविका उपार्जन की व्यवस्था (प्लेसमेंट)
- विभागीय सेमिनार स्त्री जीवन पर आधारित अध्ययन,अध्यापन,अनुसंधान, संगोष्ठी,पुस्तक लेखन एवं आलेख प्रकाशन
- लघुशोध प्रबंध के नवनूतन विषय एवं सिनेमा,धारावाहिक का समावेश

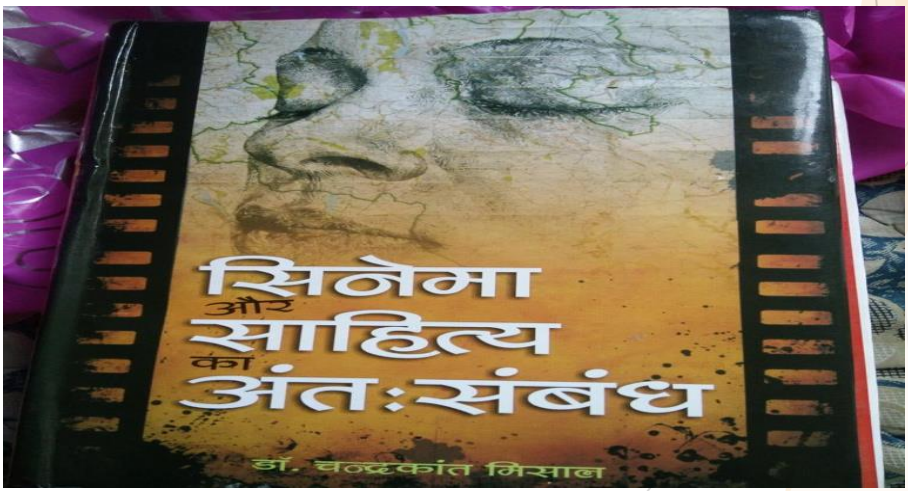

अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान के संसाधन व स्त्रोत

- विभागीय ग्रंथालय
- आधार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ,पत्रिकाएँ 1000
- फिल्म सीडी - 1000
- समाचार पत्र
- भारतीय भाषा,यूनीकोड, विकिपीडिया
- रेडियो
- टेलीविजन
- संगणक
- प्रोजेक्टर
- इंटरनेट
- हिन्दी वेबसाईट
- शोध प्रकल्प
- प्रिंटर
- व्यक्तिगत मार्गदर्शन
- समुपदेशन
- कार्यक्रम में छात्राओं की सहभागिता

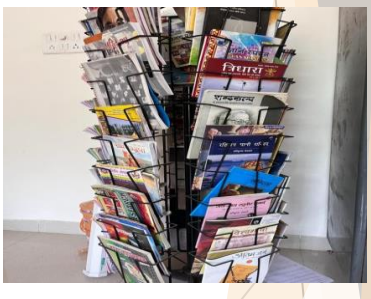

विभागीय समितियां,संगोष्ठियाँ और चर्चा सत्र

विविध सामजिक कार्यक्रमों में प्राध्यापकों एवं छात्राओं की सहभागिता....

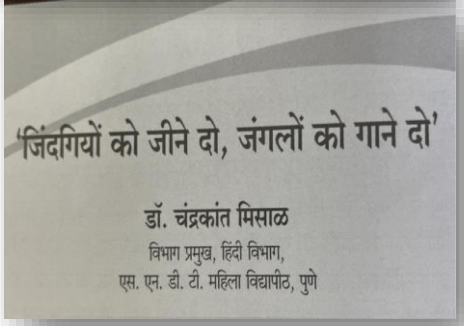

प्रकृति और मानव

मानव और प्रकृति का अटूट संबंध है। प्रकृति के बिना मानव की कल्पना निर्मूल है। मानव के खान-पान, रहन-सहन, आधुनिक सुविधाएँ सभी प्रकृति प्रदत्त हैं। प्रकृति उर्फ नेचर मानव के जीवन का अभिन्न अंग है, जो उसे जीवन देने के साथ अनेक पशु-पक्षियों और जीवों को जीवनदान देती है। युगों-युगों से प्रकृति के अंश सूरज, नदियाँ, पेड़, पौधे, पहाड़, हवा, भूमि आदि मानव के लिए प्राणवायु ही नहीं रहे हैं, अपितु मानव का शरीर भी इस प्रकृति के तत्व अर्थात धरती, आकाश, पानी, वायु, अग्नि पाँचों के मेल से बना है। सुन्दर झरने, लहलहाते खेत, मीलों तक फैले जंगल आदि मानव को सदैव अभिभूत करते रहे हैं। यही प्रकृति जाने-अंजाने मानव को जीवन जीने की कला भी सिखाती रही है। हमारे साहित्य में प्रकृति के सुंदर और मोहक दृश्यों को

मधुवन की खुशबू किसी जाति, सम्प्रदाय या जीव के लिए न होकर सम्पूर्ण सृष्टि के लिए होती है। सागर से भाप बनकर उड़ा पानी सावन बन हर वर्ग का पोषण करता है। बिना किसी अपेक्षा के प्रकृति निरंतर हमें कुछ न कुछ देती ही रहती है पर सवाल ये उठता है कि इतनी दयालु प्रकृति अचानक विभास रूप कैसे धारण कर लेती है। कैसे अचानक बादल फट जाता है, आग फैल जाती है, पर्वत खिसकने लगते हैं, सुनामी आ जाती है, ज्वालामुखी फटने लगते हैं, सूखा, आकाल और महामारी आ जाती है। तो इन तमाम सवालों का जवाब है मानव की अति महत्वाकांक्षा जो निरंतर प्रकृति से खिलवाड़ कर रही है, जरुरत से अधिक का लालच उसे दानव बनाता जा रहा है। जिसकी जकड़न में प्रकृति दम तोड़ने पर विवश है।

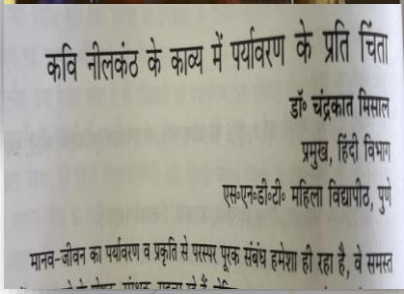

छात्राओं के सम्मान, पुरस्कार एवं उपाधि....

श्रध्दा ज्ञान देती है,नम्रता मान देती है, योग्यता स्थान देती है, श्रद्धा,नम्रता,योग्यता,सफलता और मेहनत मिल जाए तो व्यक्तित्व सम्मानित और पुरस्कृत होता है

एस्. एन्. डी. टी. महिला विद्यापीठ

* कुलगीत *

"संस्कृता स्त्री पराशक्ति" स्वर हमारा है
विश्व है परिवार, भारत घर हमारा है।
हम नहीं हैं दीन, कहता कौन हम अबला
है सबल संस्कृति हमारी, हम सभी सबला
ज्योती से जगमग हुआ, अंतर हमारा है।।
स्वप्न ठाकरसी हुआ साकार है इसमें
महर्षि कर्वे तपस्या - सार है इसमें
हम दिशाएँ और यह दिनकर हमारा है।।
"संस्कृता स्त्री पराशक्ति" स्वर हमारा है
विश्व है परिवार, भारत घर हमारा है।